मन काम है सोचना, इच्छा बनाना। मन ऐसी मशीन है जो एक क्षण को भी चूप नही रह सकती। लगातार चलती रहती है। यह सामान्य अनुभव है कि हमारे विचार निरंतर बदलते रहते हैं। ऐसे ही दूसरे व्यक्ति के विचार भी बदलते रहते है। इसलिए एक दिन के लिए भी, कोई भी दो व्यक्तिओं के विचार एक से रहना असंभव सा है। कभी आप भगवान के बारे में सोचते हैं। कभी आप उच्च मूल्यों से प्रेरित हो जाते हैं। कभी आप जीवन का आनंद लेना चाहते हैं। और कभी आप काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या के प्रभाव में या अपने स्वार्थ के लिए सुनियोजित तरीके से हीन कार्य करते हैं। हिंदु दर्शन इन चार स्तरों को क्रमशः दिव्य, सात्विक, राजस और तामस क्रियाओं में वर्गीकृत करता है। इन वर्गों से संबंधित कुछ सोचने के तरीके नीचे सूचीबद्ध हैं।

1. ईश्वरीय सोच: आप ईश्वर को सर्वशक्तिमान, दयालु और प्रेममय मानते हैं। तत्वग्यान, पूजा, प्रार्थना, भजन, कीर्तन आदि करते हैं। आप अपने पिछले पापपूर्ण कृत्यों के लिए पश्चाताप करते हैं और भविष्य में ऐसी गतिविधियों में शामिल नहीं होने की प्रतिग्या करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

2. सात्विक सोच: आपकी सोच उच्च नैतिक मूल्यों से संचालित होती है। आप दान, दया के कर्मों में लिप्त हो जाते हैं और परोपकारी प्रवृत्ति दिखाते हैं।

3. राजस सोच: आप वैध इंद्रियों के भोग के माध्यम से संतुष्टि चाहते हैं।

4. तामस सोच: आप पापी और आपराधिक कृत्यों की योजना बनाते हैं और उन्हें क्रियान्वित करते हैं। आप आलसी महसूस करते हैं या क्रोध और अन्य जानवरों की प्रवृत्ति से प्रबल हो जाते हैं।

सात्विक, राजस और तामस भौतिक माया के गुण है। और ईश्वर भक्ति इन गुणों से परे जा कर शाश्वत सुब पाने का तरीका है। ईश्वरीय चिंतन सबसे अच्छा है, तमस सबसे बुरा है और सात्विक राजस से बेहतर है। यह व्यक्तियों का पदानुक्रम है।

आपको यह देखकर आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि ईश्वर भक्ति को सभी दान और सेवा कार्यों से ऊपर रखा गया है। धर्म, राष्ट्र, जाति, पंथ, वित्तीय स्थिति, सामाजिक स्थिति इत्यादि के आधार पर किसी भी प्रकार के भेद के बिना किसी भी प्रकार के कष्टों से स्थायी रूप से किसी भी व्यक्ति को छुटकारा दिलाने की ईश्वर भक्ति की क्षमता होती है। परोपकार कर्म सभी प्रकार के कष्टों से लाभार्थी या उपकारकर्ता को राहत देने में सक्षम नहीं हैं। इस तरह की कार्रवाइयाँ ईश्वर की प्राप्ति के प्रति आपके मन को खोलने में मदद नहीं करती, क्योंकि लाभार्थी और उपकारकर्ता दोनों का मन सीमित भौतिक वस्तुओं में उलझा रहने के कारण शुद्ध नही हो पाता। इसलिए, इस तरह के कार्यों से उनमें से किसी को भी अनंत और शाश्वत खुशी नहीं मिल सकती। हाँ, ये है कि सात्विक कर्म उपकारकर्ता को स्वर्ग का सुख दिला सकता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132